PTEC

Monthly
NEWS LETTER

Volume 2 November, 2025 Issue 7

जीवन अपने आप में एक अद्भुत रंगोली की तरह है—जिसमें हर रंग एक अनुभव, हर छाया एक सीख और हर रेखा एक नई दिशा का संकेत देती है। कभी यह रंगों से भरा उत्सव लगता है, तो कभी हल्के मेघों से ढकी कोई अनकही कहानी। पर यही विविधता जीवन को सुंदर, अर्थपूर्ण और प्रेरणादायक बनाती है।

रंगों से भरपूर जीवन का पहला रंग है *खुशी*—जो छोटी-छोटी बातों से उभरता है। बच्चे की हँसी, सुबह की ठंडी हवा, या किसी अनजान व्यक्ति की मुस्कान—ये सब खुशी के वो रंग हैं जो जीवन को सुहाना बनाते हैं।

दूसरा रंग है *संघर्ष* यह भले ही गहरा और कभी-कभी बोझिल लगे, पर यही हमें मजबूत बनाता है और आगे बढ़ने की दिशा देता है। संघर्ष के बिना सफलता के उजले रंग कभी न दिखते।

जीवन में *आशा* का रंग भी अनोखा है। यह वह रोशनी है जो अंधेरी राहों में हमारा मार्गदर्शन करती है। जब परिस्थितियाँ कठिन होती हैं, तब यही आशा हमें फिर से खड़ा करती है और नई शुरुआत का साहस देती है। इसके साथ ही जीवन में *प्रेम* का रंग है, जो रिश्तों को मधुर बनाता है और मन को कोमलता से भर देता है। परिवार, मित्र, समाज—सब प्रेम के रंग से ही जुड़े रहते हैं।

कभी-कभी जीवन में *निराशा* और *असफलता* की धुंधली छायाएँ भी आती हैं, पर वे भी इस रंगबिरंगी तस्वीर का एक हिस्सा हैं। ये हमें रुककर सोचने, खुद को समझने और आगे बढ़ने का नया मार्ग खोजने का अवसर देती हैं। यदि केवल उजले रंग ही होते, तो जीवन की तस्वीर अधूरी और फीकी हो जाती।

दरअसल, जीवन तभी सुंदर बनता है जब वह सभी रंगों को साथ लेकर चलता है—उत्साह, संघर्ष, उम्मीद, प्रेम, हँसी, आँसू... सब मिलकर इसे पूर्णता देते हैं। हमें चाहिए कि हम हर रंग को समान सम्मान दें, क्योंकि हर अनुभव हमारे व्यक्तित्व में एक नई चमक जोड़ता है।

अंततः, जीवन एक कैनवास है और हम उसके चित्रकार। हमारे चुनाव, हमारे विचार और हमारे कर्म ही वह तूलिका हैं जो भविष्य का चित्र बनाती है। इसलिए हर रंग को अपनाइए, हर पल को जी भरकर महसूस कीजिए, और अपने जीवन को एक सुंदर, प्रेरक और अर्थपूर्ण चित्र में बदल दीजिए।

यही जीवन की सच्चाई है — यह सचमुच बेहद रंगबिरंगा है।

संपादक

हार्दिक-विदाई

खुशी, आभार और थोड़ा भावुकपन लिए आज का यह दिन,
मैम उषा आपके लिए समर्पित हो।

आपका PTEC परिवार में शामिल होना, हम सभी के लिए एक मार्गदर्शक, एक प्रेरक और एक मित्र की भांति रहा। आपने दिनांक 06-01-2025 को सामाजिक विज्ञान शिक्षिका के रूप में पदार्पण किया। दस महीने की आपकी उपस्थिति, आपकी हर मुस्कान, हर सीख हम सभी के दिलों में अमिट रहेगी।

आपकी सरल वाणी और विद्यार्थियों के प्रति आपका समर्पण हम सभी को प्रेरित करता रहेगा। आपके मार्गदर्शन और प्रेम के लिए हृदय से धन्यवाद। हम आपके उज्जवल भविष्य और अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते हैं।

आज जब आप आगे बढ़ रहे हैं,
हमारे दिल में बस यही दुआ है,
आप जहाँ भी रहें, मुस्कुराते रहें,
लोगों में जीवन की रोशनी बांटते रहें।

हार्दिक स्वागत

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय के परिवार द्वारा नए व्याख्याता **श्री विनय एक्का** का हार्दिक स्वागत किया गया। प्रातःकालीन सभा में छात्रों एवं समस्त स्टाफ ने उनका गर्मजोशी से अभिनंदन किया। उनके महाविद्यालय में आगमन से संस्थान में नई ऊर्जा और उत्साह का संचार हुआ है।

श्री एक्का दो महत्वपूर्ण विषयों— **'नवोदित भारतीय समाज में शिक्षा एवं शिक्षक'** तथा **'विद्यालय संगठन, निर्देशन एवं परामर्श'** का अध्यापन करेंगे। इन विषयों में उनका गहन ज्ञान और व्यवहारिक अनुभव निश्चय ही प्रशिक्षणार्थियों के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा।

महाविद्यालय को आशा है कि श्री एक्का प्रशिक्षुओं में सकारात्मक दृष्टिकोण, संवेदनशीलता और पेशेवर क्षमता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगे। महाविद्यालय परिवार उनकी उपस्थिति को एक नए अध्याय की शुरुआत मानता है और उनके साथ एक सफल एवं समृद्ध शैक्षिक यात्रा की अपेक्षा करता है।

पूरे महाविद्यालय परिवार की ओर से उन्हें उज्ज्वल और सफल कार्यकाल की शुभकामनाएँ।

प्रथम
निधि खलखो
प्रथम वर्ष 'ब'

युवा पीढ़ी की भूमिका : झारखण्ड के विकास में

रूपरेखा-

1. प्रस्तावना
2. युवाओं का योगदान
3. विकास में युवाओं की चुनौतियाँ
4. युवाओं की समस्याओं का सामाधान
5. निष्कर्ष

झारखण्ड राज्य भारत के उत्तर-पूर्वी भाग में स्थित राज्य है। झारखण्ड राज्य 15 नवंबर 2000 ई. को बिहार राज्य से अलग होकर एक स्वतंत्र राज्य बना। झारखण्ड में उराँव, खड़िया, हो, मुंडा आदि जाति, धर्म के लोग रहते हैं। झारखण्ड राज्य सुंदर तथा प्राकृतिक संसाधनों से सम्पन्न राज्य है। जिस कारण से यह उद्योगों के प्रमुख केन्द्रों के रूप में उभर रहा है। झारखण्ड के विकास में हमारे देश के युवा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। युवा ही किसी राष्ट्र को उन्नति के पथ पर ले जा सकते हैं। युवा यदि चरित्रवान हो तो समाज भी उनका अनुसरण कर चरित्रवान बनेगा और समाज तथा राज्य को विकास के पथ में आगे बढ़ाएगा।

युवा समाज का मविष्य है।"

किसी भी राष्ट्र के निर्माण में उस समाज, राज्य तथा देश में रहने वाले लोगों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। युवा ही राज्य के निर्माता और पथ प्रदर्शक होते है। आज यदि हम कहें तो युवा विभिन्न क्षेत्रों में अपना नाम कमा रहा है। युवा वर्ग झारखण्ड के विकास के लिए सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपना महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहें हैं। युवा यदि शिक्षित है तो उस देश, राष्ट्र तथा समाज की सामाजिक स्थिति में परिवर्तन हो रहा है। वे दूसरों को भी शिक्षा दिलाने का प्रयास कर रहें हैं। यदि हम खेल जगत में झांक का देखें, तो सलीमा टेटे और दीपिका कुमारी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जगत में अपने तथा हमारे राज्य झारखण्ड का नाम रौशन कर रही हैं तथा दूसरे यवाओं को खेल जगत में आगे लाने के लिए प्रेरित कर रही हैं। आज युवा वर्ग राजनीतिक पदों में भी अपना नाम दर्ज कराकर समाज के समस्याओं के समाधान के लिए आवाज उठा रहें हैं। सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी युवा वर्ग अपनी भूमिका निभा रहें हैं। वे झारखण्ड के रीति-रिवाजों को याद रखने तथा संरक्षित करने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर रहें हैं, जिससे हमारे झारखण्ड राज्य को संस्कृति को दूसरे राज्य देखें और प्रभावित हो सकें। आज तकनीकी क्षेत्रों में भी झारखण्ड की युवा अपना प्रदर्शन कर रहें हैं। वे अपनी कला-संस्कृति से अपने रोजगार प्राप्त कर आत्मनिर्भर बन रहें हैं। जिससे समाज विकास की ओर अग्रसर हो रहा है। वर्तमान में युवाओं के कार्यों में अनेक समस्याएँ मुँह मोड़कर खड़ी हुई है। जिसमें प्रमुख समस्याएँ बेरोजगारी, कौशल आधारित प्रशिक्षणों में कमी, पलायन की समस्या आदि शामिल हैं। इसके अलावा प्राकृतिक सम्पदाओं का खनन, भ्रष्टाचार आदि झारखण्ड राज्य के विकास में बाधा डाल रही है। हमारे समाज में युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा नहीं मिल पा रही है। जिस कारण युवा वर्ग शिक्षित होने के कारण भी बेरोजगार है। बिजली की समस्या और विभिन्न तकनीकी कौशलों की कमी के कारण युवा वर्ग बेरोजगार है। झारखण्ड राज्य में खनिज-सम्पदाओं का इतना अधिक खनन हो रहा है तथा दूसरे राज्य की कंपनियों को हस्तांतरित होने के कारण युवा वर्ग अपने पलायन के लिए दूसरे राज्य तथा विदेशों में जा रहे हैं। इन सभी कारणों से युवाओं को अपने जिम्मेदारियों को पूरा करने में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है और झारखण्ड राज्य का विकास में युवाओं को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सरकारी नौकरियों की पदों में वृद्धि, कौशल-आधारित प्रशिक्षण की आवश्यकता है। राज्य के विकास के लिए यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों को उनकी योग्यताओं तथा क्षमताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान किया जाय, ताकि समाज तथा राज्य शिक्षित हो सके। वर्तमान समय में बेरोजगारी को समाप्त करना अति आवश्यक है। इसके लिए सरकार को अधिक से अधिक नौकरी के पदों के लिए नियुक्ति करनी चाहिए। जिससे समाज के लोग बेरोजगार न रहे और उन्हें रोजगार प्राप्त हो, जिससे वे परिवार का पालन-पोषण अच्छी तरह कर सकें, जिससे समाज तथा राज्य साथ ही राष्ट्र शिक्षित तथा सभ्य बन सके। हमारे देश की संस्कृति ही हमारी पहचान है। हमारे राज्य की संस्कृति को हमें सुरक्षित रखने की आवश्यकता है। विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कर जैसे- सांस्कृतिक वेशभूषा प्रतियोगिता का आयोजन कर हम हमारे संस्कृति को दूसरे के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं तथा अपने संस्कृति को भविष्य के लिए संरक्षित कर सकते हैं। यहाँ के युवाओं को अपने राज्य की समस्याओं का समाधान करने तथा आवाज उठाने के लिए राजनीति में नाम दर्ज कराने की आवश्यकता है।

युवा राष्ट्र के निर्माता तथा सामाजिक परिवर्तन के वाहक होते हैं। यदि हमारे राज्य के युवा शिक्षित हो, क्रियाशील हो तो वे समाज को बदल सकते हैं। युवा शक्ति राष्ट्र की सबसे बड़ी शक्ति है, यदि युवा बदलेगा तो समाज बदलेगा, समाज बदलेगा तो राज्य का विकास होगा।

द्वितीय
नितेश यादव

झारखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा और पर्यावरण संरक्षण

झारखण्ड भारत के पूर्वी भाग में स्थित एक ऐसा राज्य है जिसमें प्रकृति, सौन्दर्य, खनिज-सम्पदा, घने जंगल और विविध जैव विविधता के कारण "वनों की भूमि" कहा जाता है। यहाँ की प्राकृतिक धरोहर न केवल राज्य की आर्थिक रीढ़ है, बल्कि इसकी संस्कृति है।।

झारखण्ड भारत का वह राज्य है जिसे प्रकृति ने उदारता से नवाजा है। घने जंगल, खनिजों से भरा, भू-स्तर बहती नदियाँ, झरने और विविध जैव सम्पदा इसे देश के सबसे समृद्ध क्षेत्रों में शामिल करते हैं। यहाँ की प्राकृतिक सम्पदा न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था का आधार है, बल्कि आदिवासी समुदायों की संस्कृति, परंपरा और जीवन शैली का भी महत्वपूर्ण अंग है।

झारखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा

1. वन सम्पदा:- झारखण्ड का लगभग एक तिहाई क्षेत्र घने वनों से आच्छादित है। साल, सागवान, महुआ, शीशम, कुसुम और करंज जैसे वृक्ष यहाँ के जंगलों की पहचान है। ये वन यहाँ के लोगों की ईंधन की आवश्यकताओं को पूर्ति करते हैं।
2. खनिज सम्पदा:- झारखण्ड को भारत का खनिज भंडार कहा जाता है। यहाँ कोयला, लौह अयस्क, बॉक्साइड, मैगनीज, अभ्रक तथा यूरेनियम महत्वपूर्ण खनिजों की भरपूर उपलब्धता है। खनन उद्योग राज्य की औद्योगिक और आर्थिक प्रगति में केंद्रीय भूमिका निभाता है।
3. दामोदर, स्वर्ण रेखा, बराकर और कोयल जैसी नदियाँ राज्य की जीवन-रेखा है। इनके किनारे स्थित झरने पर्यटक को आकर्षित करते हैं।
4. जैव-विविधता:- बेतला राष्ट्रीय उद्यान और पलामू टाइगर रिजर्व जैसे संरक्षित क्षेत्र हाथी, बाघ, हिरण, भालू, तेंदुआ समेत अनेक अन्य प्रजातियों का घर है। यहाँ अनेक दुर्लभ पक्षी और औषधीय पौधे भी पाये जाते हैं।

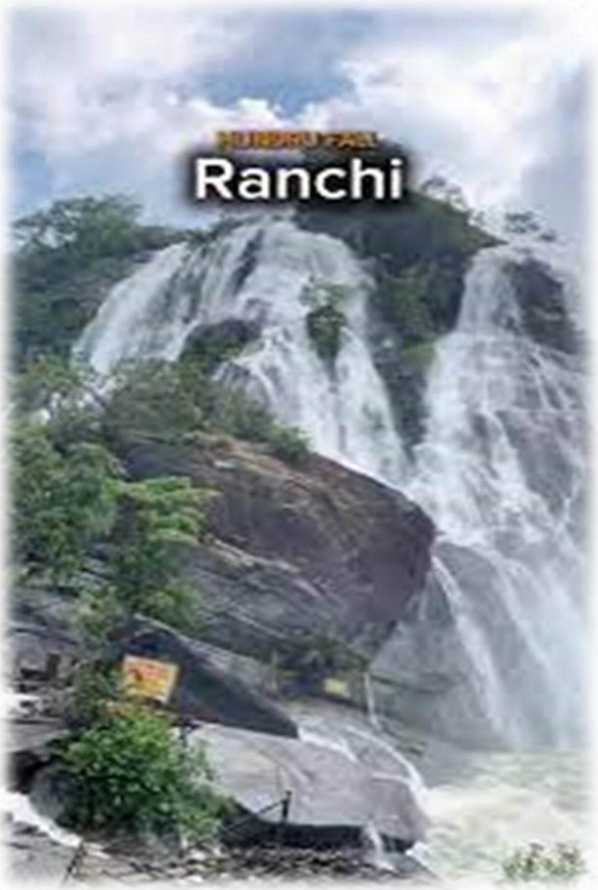

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

खनन, औद्योगिक विकास और वनों की कटाई के कारण पर्यावरण असंतुलित हो रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण और भूमि प्रदूषण जैसी समस्याएँ बढ़ती जा रही हैं। इसलिए प्राकृतिक संसाधनों की आवश्यकता अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण संरक्षण के उपाय

1. अत्यधिक मात्रा में पेड़ एवं वृक्ष रोपण प्रक्रिया में बढ़ोतरी करना।
2. अत्यधिक मात्रा में बाँध निर्माण प्रक्रिया।
3. ग्रामीण इलाकों में अत्यधिक मात्रा में कृषि एवं मेढ़बन्दी प्रक्रिया।
4. सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा की प्रक्रिया में बढ़ावा।
5. लोगों को पर्यावरण संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक करना।

तृतीय
नाम सरोज तोपनो
प्रथम वर्ष खंड 'ब

झारखण्ड : संघर्ष से राज्य बनने का सफर

रूपरेखा :-
1 प्रस्तावना।
2. संघर्ष से राज्य बनने का 60 वर्षों की लम्बी सफर
४. आदिवासी अस्मिता की पहली गूंज
4. राजनीतिक अस्वीकृति एवं जनता का संघर्ष
5. झारखण्ड आंदोलन की जीत ....
6. निष्कर्ष

1. प्रस्तावना

झारखण्ड राज्य जंगल, पहाड़ और हरी-भरी वनस्पतियों से भरपूर एक सुंदर प्रदेश है। 'झारखण्ड' शब्द का अर्थ है—झाड़ अर्थात् जंगल और खण्ड अर्थात् हिस्सा—अर्थात् जंगलों से घिरा हुआ प्रदेश। पहले यह क्षेत्र बिहार के दक्षिण भाग में आता था, लेकिन लंबे संघर्षों के बाद इसे बिहार से अलग कर एक नया राज्य बनाया गया।

झारखण्ड को अलग राज्य का दर्जा दिलाने के लिए अनेक महापुरुषों ने अपने जीवन को समर्पित कर दिया। उन्होंने जी-जान लगाकर इस क्षेत्र को नई पहचान, नया नाम और नया स्वरूप दिलाने के लिए कठिन परिश्रम किया। झारखण्ड की मिट्टी, यहाँ की संस्कृति और यहाँ के आदिवासी समुदाय की परंपराएँ इस राज्य को विशेष बनाती हैं।

2. संघर्ष से राज्य बनने तक – 60 वर्षों की लंबी यात्रा

झारखण्ड को एक अलग राज्य के रूप में स्थापित करने में अनेक महान व्यक्तियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इनमें प्रमुख नाम हैं—**जयपाल सिंह मुंडा**, जिन्हें हम 'मरङ्ग' और 'गोमके' के नाम से भी जानते हैं। उन्होंने 1939 ई. में पहली बार झारखण्ड आंदोलन की आवाज बुलंद की और आदिवासी समुदाय के अधिकारों के लिए संघर्ष किया।

इसी तरह हमारे 'दिसोम गुरु' **शिबू सोरेन** ने भी बिहार से अलग राज्य की माँग को लगातार आगे बढ़ाया। इसके अलावा 'झारखण्ड के पिता' कहे जाने वाले **भगवान बिरसा मुंडा** ने अपनी पूरी जिंदगी जनजातीय समाज के उत्थान, जंगल-जमीन की रक्षा और स्वशासन की मांग में लगा दी। इन महापुरुषों के संघर्षों की वजह से झारखण्ड आंदोलन दशकों तक जीवित रहा।

3. आदिवासी अस्मिता की पहली गूंज

सन् 1939 में जयपाल सिंह मुंडा ने पहली बार झारखण्ड राज्य का नारा दिया। उन्होंने अनेक चुनौतियों का सामना करते हुए आदिवासी अस्मिता और पहचान की रक्षा का आंदोलन चलाया। बिहार से अलग होकर एक अलग आदिवासी राज्य बनाने का सपना उन्होंने सबसे पहले स्पष्ट रूप से रखा।

छह दशकों तक यह आंदोलन कई बार दबा, कमजोर हुआ, लेकिन बिरसा मुंडा, जयपाल सिंह मुंडा, शिबू सोरेन और अन्य नेताओं के सतत प्रयासों ने इसे लगातार जीवित रखा। अंततः 15 नवम्बर 2000 को बिहार के दक्षिणी हिस्से को अलग कर 'झारखण्ड' नाम का नया राज्य बनाया गया, जिसे भारत का **28वाँ राज्य** घोषित किया गया।

4. राजनीतिक अस्वीकृति एवं जनता का संघर्ष

झारखण्ड आंदोलन के दौरान कई राजनीतिक नेताओं और कार्यकर्ताओं ने इस मांग को अस्वीकार किया। झारखण्ड की जनता अलग राज्य चाहती थी, लेकिन उसे कई प्रकार की आलोचना, विरोध और निराशा का सामना करना पड़ा। आंदोलन की माँग को कई बार ठुकराया गया, फिर भी जनता ने हिम्मत नहीं हारी और संघर्ष लगातार जारी रखा।

5. झारखण्ड आंदोलन की जीत

लंबे संघर्ष और अनगिनत बलिदानों के बाद वर्ष 2000 में झारखण्ड आंदोलन को ऐतिहासिक सफलता मिली। **15 नवम्बर 2000** को झारखण्ड राज्य का गठन हुआ। यह दिन हम सबके लिए गर्व का दिन है, क्योंकि हमारे अनेक महापुरुषों के संघर्ष, बलिदान और दृढ़ संकल्प के कारण ही झारखण्ड को अलग राज्य का दर्जा मिला। रांची को इसकी राजधानी बनाया गया और यह भारत का 28वाँ राज्य बना।

निष्कर्ष

इस प्रकार लंबे आंदोलन, संघर्ष और बलिदान की यात्रा के बाद झारखण्ड एक स्वतंत्र राज्य के रूप में स्थापित हुआ। 15 नवम्बर को हम प्रतिवर्ष **झारखण्ड स्थापना दिवस** मनाते हैं, जो भगवान **बिरसा मुंडा जयंती** के कारण और भी पावन एवं प्रेरणादायक बन जाता है। यह दिन हमें हमारे महान नेताओं के त्याग-परंपरा और संघर्षशीलता की याद दिलाता है।

प्रथम
अनुजा नेहा पन्ना
द्वितीय वर्ष 'ब'

युवा पीढ़ी की भूमिका झारखंड के विकास में

युवा है उगते सूरज जैसे,जग में रोशनी हैं फैलाते जाते, जब हिम्मत से हैं कदम बढ़ाते,तो इतिहास भी हैं वे ही बनाते।

झारखण्ड के युवा और राज्य का विकास

परिचय

युवा पीढ़ी किसी भी राज्य की सबसे बड़ी ताकत होती है। झारखण्ड राज्य का भविष्य भी इन्हीं युवाओं के हाथों में सुरक्षित है, जो अपने सक्रिय योगदान से राज्य के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। झारखण्ड की आबादी का एक बड़ा हिस्सा युवाओं से बना है, जिनमें ऊर्जा, उत्साह, जज़्बा और परिश्रम की अद्भुत क्षमता भरी हुई है। यही युवा राज्य के आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और शैक्षिक विकास की "रीढ़ की हड्डी" है, जो अथक परिश्रम और समर्पण के साथ आगे बढ़ते हुए सभी को साथ लेकर विकास के मार्ग पर आगे ले जाता है।

झारखण्ड के युवा और विकास

झारखण्ड के युवा आधुनिक सोच, अनुशासन, परिश्रम और कौशल के बल पर राज्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। इन युवाओं में लक्ष्य के प्रति समर्पण और प्रगतिशील सोच दिखाई देती है। यही कारण है कि आज झारखण्ड अनेक क्षेत्रों में निरंतर उन्नति कर रहा है।

1) आधुनिक शिक्षा एवं कौशल के माध्यम से विकास

आज के युवा केवल पारंपरिक शिक्षा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे आधुनिक ज्ञान और नए कौशल सीखकर राज्य के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। तकनीकी शिक्षा, कंप्यूटर एवं डिजिटल कौशल, व्यावसायिक प्रशिक्षण इन सभी क्षेत्रों में झारखण्ड के युवा पूरे देश में अपनी पहचान बना रहे हैं।

2) रोजगार एवं उद्यमिता द्वारा विकास

झारखण्ड के युवा केवल नौकरी खोजने वाले नहीं, बल्कि नौकरी देने वाले बन रहे हैं। वे छोटे उद्योग, हस्तशिल्प, कृषि आधारित कार्य, हैंडीक्राफ्ट, व्यापार एवं स्टार्टअप जैसे क्षेत्रों में नए अवसर पैदा कर रहे हैं। इससे ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में रोजगार बढ़ रहा है। युवा स्वयं सक्षम बन रहे हैं और समाज के पिछड़े वर्गों को भी साथ लेकर चल रहे हैं।

3) संस्कृति एवं खेल में योगदान

झारखण्ड की समृद्ध संस्कृति राज्य की शान है, और इसके संरक्षण में युवा महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे हैं:-पारंपरिक पहनावा, लोकगीत, लोकनृत्य, त्योहार एवं रीतिरिवाज को पूरे गर्व से आगे बढ़ाते हैं।

खेल के क्षेत्र में भी झारखण्ड के युवाओं ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राज्य का नाम रोशन किया है। प्रमुख उदाहरण—महेन्द्र सिंह धोनी, दीपिका कुमारी, सलीमा टेटे। इन खिलाड़ियों ने अपनी मेहनत और समर्पण से पूरे देश में झारखण्ड की पहचान को मजबूत किया है और युवाओं के लिए प्रेरणा बने हैं।

4) सामाजिक जागरूकता में भूमिका

झारखण्ड के युवा समाज में फैली कुरीतियों जैसे—बाल-विवाह, दहेज-प्रथा, अंधविश्वास के खिलाफ लोगों को जागरूक कर रहे हैं। उनकी यह पहल राज्य के सामाजिक विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

5) पर्यावरण संरक्षण में योगदान

झारखण्ड की समृद्धि उसके जंगलों, नदियों और प्राकृतिक संपदाओं से जुड़ी है। युवा पर्यावरण संरक्षण के लिए—

- वृक्षारोपण
- स्वच्छता अभियान
- पानी बचाओ अभियान

जैसी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभा रहे हैं, जिससे राज्य के सतत विकास को बढ़ावा मिल रहा है।

समापन

झारखण्ड की धरती अपने युवाओं को पुकारती है—

"आगे बढ़ो, मेहनत करो, ज्ञान अपनाओ और अपनी ऊर्जा से राज्य का भविष्य उज्ज्वल बनाओ।"

वास्तव में, झारखण्ड की युवा पीढ़ी ही राज्य की सबसे बड़ी शक्ति है। यदि सभी युवा एकजुट होकर आगे बढ़ें, तो वे राज्य के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर एक समृद्ध और शक्तिशाली झारखण्ड का निर्माण कर सकते हैं।

द्वितीय
वतिस्ता यादव
द्वितीय वर्ष 'अ'

झारखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा और पर्यावरण संरक्षण

भूमिका

झारखण्ड अपनी समृद्ध प्राकृतिक सम्पदा और हरियाली के कारण 'वन प्रदेश' तथा 'झारखण्ड' (जंगल और झाड़ियों की भूमि) के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ के मनमोहक झरने, घने जंगल, विशाल जलाशय, विविध खनिज और दुर्लभ वन्यप्राणी इस राज्य को अद्वितीय बनाते हैं। प्राकृतिक वातावरण ही वह आधार है जिससे हम शुद्ध हवा, स्वच्छ पानी, भोजन और जीवन के लिए आवश्यक संसाधन प्राप्त करते हैं। यह प्रकृति का अमूल्य उपहार है, जिसके संरक्षण की जिम्मेदारी प्रत्येक नागरिक की है। आज पर्यावरण संरक्षण केवल सरकारी नारा नहीं, बल्कि वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक **नैतिक कर्तव्य** बन चुका है। प्राकृतिक सम्पदा और पर्यावरण संरक्षण हमारे वर्तमान जीवन और भविष्य दोनों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

प्राकृतिक सम्पदा और पर्यावरण संरक्षण का महत्त्व

झारखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा का हमारे जीवन में अनोखा महत्व है—

- हमें शुद्ध हवा, स्वच्छ जल और सुरक्षित पर्यावरण उपलब्ध कराती है।
- यहाँ की खनिज सम्पदा—कोयला, लोहा, तांबा, अभ्रक आदि—देश के उद्योगों और ऊर्जा उत्पादन में अत्यंत उपयोगी है।
- प्राकृतिक संसाधनों के कारण रोजगार के अनेक अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे राज्य और देश की अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है।
- जंगल, पहाड़, जलवायु और महासागर जैसे तत्व पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखते हैं, जो सभी जीवों के स्वास्थ्य और अस्तित्व के लिए अत्यंत आवश्यक है।

इस प्रकार, झारखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा राज्य की आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान का मूल आधार है।

संरक्षण के उपाय

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण समय की बड़ी आवश्यकता है। यदि आज हमने इनका ध्यान नहीं रखा, तो आने वाली पीढ़ियों का जीवन कठिन हो जाएगा। संरक्षण के प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं—

1. वृक्षारोपण

अधिक से अधिक पेड़ लगाना पर्यावरण संरक्षण का सबसे सरल और प्रभावी उपाय है। पेड़ 'प्रकृति के फेफड़े' हैं, जो हमें ऑक्सीजन प्रदान करते हैं और जलवायु संतुलन बनाए रखते हैं।

2. वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का उपयोग

जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता कम कर सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा और जल विद्युत जैसे **नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों** का उपयोग बढ़ाना आवश्यक है।

3. प्लास्टिक का बहिष्कार

एक बार उपयोग होने वाले डिस्पोजेबल प्लास्टिक का उपयोग रोकना चाहिए। इसके स्थान पर **जूट, कागज़ और कपड़े के थैले** अपनाना पर्यावरण संरक्षण में बड़ा कदम है।

4. बचत और पुनर्चक्रण

पानी, बिजली और कागज़ की बचत करना तथा कचरे का **रीसाइकल और रीयूज़** करना प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करता है।

5. जन जागरूकता

हर नागरिक को अपने कर्तव्य समझते हुए प्रकृति के अनुकूल जीवनशैली अपनानी चाहिए। जागरूकता कार्यक्रम, स्वच्छता अभियान और सामुदायिक प्रयास पर्यावरण संरक्षण को मजबूत बनाते हैं।

प्रमुख नारे

"जल, जंगल, जमीन हमारी जान — झारखण्ड की सम्पदा है महान।"
"वन बचाओ, जीवन बचाओ — झारखण्ड को हरा-भरा बनाओ।"
"पेड़ लगाओ, धरती बचाओ — झारखण्ड की शान बढ़ाओ।"

निष्कर्ष

झारखण्ड की प्राकृतिक सम्पदा इसकी सबसे बड़ी शक्ति है। ये संसाधन राज्य के आर्थिक विकास की रीढ़ हैं और लोगों की सांस्कृतिक व सामाजिक पहचान से गहराई से जुड़े हैं। हालांकि, इन संसाधनों का अत्यधिक दोहन चिंता का विषय है। केवल सतत विकास, प्रभावी नीतियों और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से ही हम अपनी प्राकृतिक विरासत को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रख सकते हैं।

प्राकृतिक सम्पदा पृथ्वी का अनमोल उपहार है—इसे सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य भी है और जिम्मेदारी भी।

तृतीय
अनीश कुमार पासवान
द्वितीय वर्ष 'ब

झारखण्ड की प्राकृतिक संपदा और पर्यावरण संरक्षण

भूमिका

झारखण्ड भारत के पूर्वी भाग में स्थित एक प्राकृतिक एवं खनिज संपदा से सम्पन्न राज्य है। यहाँ का लगभग एक-तिहाई क्षेत्र घने जंगलों से ढका हुआ है। विभिन्न जनजातियाँ—जैसे उराँव, संताल, मुंडा आदि—यहाँ निवास करती हैं और अपनी विशिष्ट संस्कृति, परंपरा तथा जीवनशैली से इस राज्य को एक अनोखी पहचान प्रदान करती हैं। खनिजों की प्रचुरता के कारण झारखण्ड को **"खनिज प्रदेश"** भी कहा जाता है।

1. वन संपदा

झारखण्ड के जंगल प्राकृतिक संपदा का मुख्य आधार हैं। यहाँ महुआ, साल, तेंदू, कुसुम, सखुआ आदि अनेक प्रकार के वृक्ष पाए जाते हैं। **महुआ** से खाद्य पदार्थ बनते हैं। **तेंदू पत्ता** से बीड़ी बनाई जाती है। **सखुआ एवं साल** का उपयोग घर बनाने, फर्नीचर और अन्य वस्तुओं में किया जाता है। वन यहाँ के लोगों के जीवन, आजीविका और पारंपरिक संस्कृति से गहराई से जुड़े हुए हैं।

2. खनिज संपदा

झारखण्ड खनिजों का भंडार है। यहाँ से प्राप्त खनिज न केवल राज्य की अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाते हैं, बल्कि देश के औद्योगिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। प्रमुख खनिज इस प्रकार हैं— **लोहा** – सरायकेला, चाईबासा। **यूरेनियम** – जादूगोड़ा। **बॉक्साइट** – लोहरदगा क्षेत्र। **कोयला** – धनबाद व झरिया। **तांबा, अभ्रक (माइका), चूना-पत्थर** – विभिन्न जिलों में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध खनिज संपदा झारखण्ड की आर्थिक रीढ़ मानी जाती है।

3. वन्य जीव

झारखण्ड में जैव-विविधता अत्यंत समृद्ध है। हाथी, तेंदुआ, हिरण, नीलगाय, भालू, लोमड़ी, मोर आदि अनेक जीव यहाँ पाए जाते हैं। राज्य में वन्य जीवों की रक्षा के लिए कई संरक्षित क्षेत्र बनाए गए हैं, जैसे— **हजारीबाग राष्ट्रीय उद्यान, पलामू टाइगर रिज़र्व, दलमा अभयारण्य।**
यह राज्य प्रकृति और वन्य जीवों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

4. जल संसाधन

झारखण्ड में अनेक नदियाँ बहती हैं, जैसे—**स्वर्णरेखा, कोयल, दमोदर, बराकर।**

इसके अलावा यहाँ कई प्रसिद्ध झरने भी हैं—दशम फॉल, हुंडरू फॉल, जोन्हा फॉल आदि। ये नदियाँ और झरने सिंचाई, पेयजल और विद्युत उत्पादन के प्रमुख स्रोत हैं।

पर्यावरण संरक्षण हेतु आवश्यक उपाय

1. **जल संरक्षण:-** नदियों व जल-स्रोतों को प्रदूषण से बचाना, वर्षा जल संचयन (Rainwater Harvesting), जल का विवेकपूर्ण उपयोग।
2. **वन्य जीव संरक्षण:-** शिकारी गतिविधियों पर पूर्ण प्रतिबंध, वन्य जीवों के लिए सुरक्षित क्षेत्र बढ़ाना, अभयारण्यों का उचित प्रबंधन।
3. **खनिज संपदा संरक्षण:-** अनियंत्रित खनन पर रोक, खदानों को भरकर पुनर्वनीकरण करना, पर्यावरण-अनुकूल खनन तकनीक अपनाना।
4. **वन संपदा संरक्षण:-** अत्यधिक वृक्ष कटाई पर रोक, बड़े पैमाने पर **वृक्षारोपण,** "एक पेड़ काटें, पाँच पेड़ लगाएँ" नीति।

प्रमुख नारे

- **"जल, जंगल, जमीन—हमारी जान; झारखण्ड की संपदा है महान!"**
- **"वन बचाओ, जीवन बचाओ"**
- **"झारखण्ड को हरा-भरा बनाओ"**
- **"पेड़ लगाओ, धरती बचाओ"**

निष्कर्ष

झारखण्ड की प्राकृतिक संपदा, खनिज भंडार, वन्य जीव और समृद्ध संस्कृति राज्य की सबसे बड़ी ताकत हैं। इन संसाधनों का संरक्षण हमारी सामूहिक ज़िम्मेदारी है। संतुलित विकास, प्रभावी सरकारी नीतियाँ और जनता की सक्रिय भागीदारी के द्वारा ही हम अपनी प्राकृतिक धरोहर को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रख सकते हैं। **प्रकृति मानव जीवन की आधारशिला है, अतः इसका संरक्षण अत्यंत आवश्यक है।**

चित्रांकन प्रतियोगिता (प्रथम और द्वितीय वर्ष)

प्रथम वर्ष

द्वितीय वर्ष

प्रथम – अनुभा टोप्पो

प्रथम – अमरजीत कुमार दास

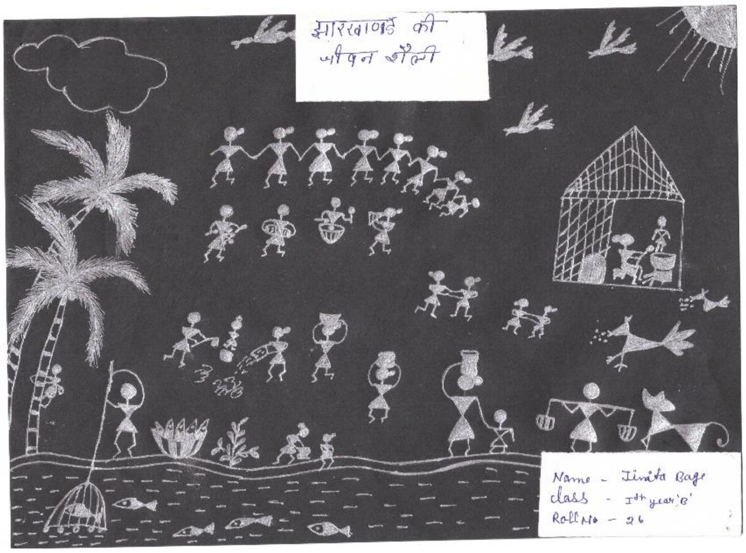

द्वितीय – जिनिता बागे

द्वितीय -अंशु टोप्पो

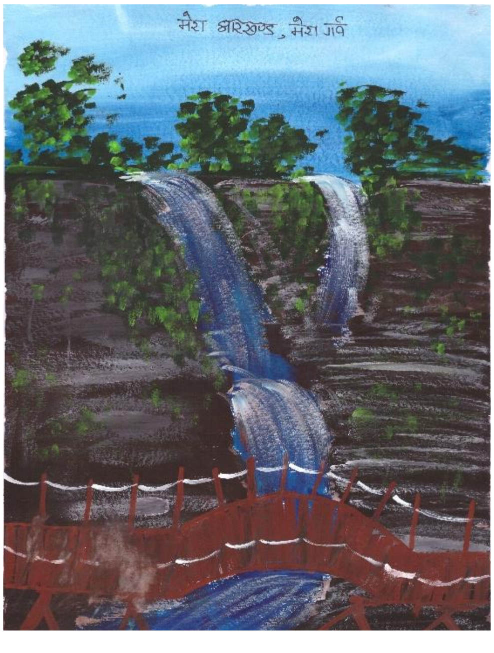

तृतीय – अतुल विवेक एक्का

तृतीय – रूपांजली तिग्गा

प्राथमिक शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, गुडुवा, सीतागढ़, हजारीबाग
सत्र 2023-25 का डी.एल.एड. (D. El. Ed.) वार्षिक परीक्षा परिणाम

महाविद्यालय अत्यंत हर्षित और गौरवान्वित है कि सत्र 2023-25 का डी. एल. एड. वार्षिक परीक्षा परिणाम शत-प्रतिशत (100%) रहा है और हमारे सभी 107 प्रशिक्षणार्थियों ने उत्कृष्ट श्रेणी (Distinction) में सफलता प्राप्त की है। यह उपलब्धि न केवल प्रशिक्षणार्थियों की मेहनत और लगन का परिणाम है बल्कि हमारे व्याख्याताओं के समर्पित मार्गदर्शन, नियमित शिक्षण-प्रशिक्षण तथा महाविद्यालय प्रबंधन के कुशल संचालन का भी प्रतिफल है।

महाविद्यालय में प्रथम स्थान पर सुश्री अंजु सुरीन 88.50 प्रतिशत, द्वितीय स्थान पर सुश्री अंजली मारंडी 87.57 प्रतिशत और तृतीय स्थान पर सुश्री सोनाली एक्का 86.79 प्रतिशत अंक प्राप्त किये।

व्याख्यातगण इस सफलता के वास्तविक स्तंभ हैं जिन्होंने प्रतिबद्धता और धैर्य के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान की। साथ ही, महाविद्यालय प्रबंधन को भी इस उल्लेखनीय सफलता के लिए धन्यवाद, जिनके बेहतर नेतृत्व और सकारात्मक वातावरण ने प्रशिक्षणार्थियों को सर्वोत्तम प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया।

हार्दिक शुभकामनाएँ एवं बधाई!

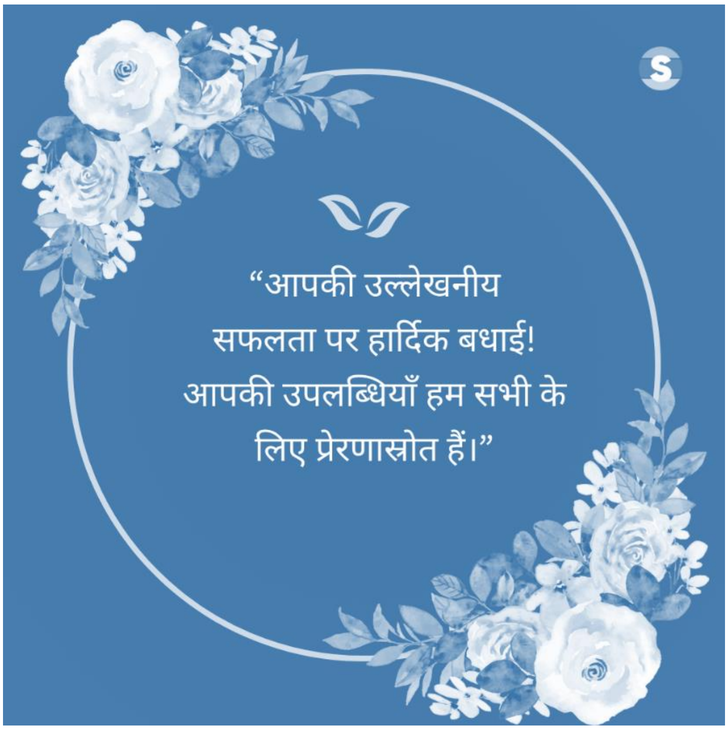

Ms. Anju Surin (88.50%)

Ms. Anjali Marandi (87.57%)

Ms. Sonali Ekka (86.79%)

Academic & Cultural Representatives	Games & Sports Representatives
Jaylas Kerketta Anand Tirkey Alisa Tirkey Prisma Toppo	Marshal Tudu Ernest Bhengra Tanwi Kerketta Priti Kerketta
Agriculture & Cleaning Representatives	**Notice Board Representatives**
Rajat Bage Asit Lakra Anima Toppo Anisha Ekka	Sachin Marandi Sanjay Aind Leema Tirkey Muskan Lakra
Liturgy & Prayer Representatives	**Flower Garden Representatives**
Anish Kerketta Ujjwal Toppo Anamika Kullu Krusita Tirkey	Sigin Munda Akash Ekka
Health & Hygiene Representatives	**Electricity Representatives**
Robin Kindo Jemmy Ekka Sunita Lugun Alka Kandulna	Akash Tirkey Anish Kumar Paswan

धान कटनी का अनुभव

भारत कृषि प्रधान देश है और यहाँ के किसान हमारे वास्तविक पालनहार हैं। वे प्रतिदिन कठिन परिश्रम करके हमारे थालियों तक भोजन का हर दाना पहुँचाते हैं। इसी भावना को समझने और एक-एक अन्न के महत्व को जानने के उद्देश्य से **PTEC महाविद्यालय** द्वारा प्रशिक्षाणार्थियों को धान रोपाई तथा कटनी का अनुभव कराया गया। 14 नवंबर 2025 को हुई **धान कटनी गतिविधि** हमारे लिए बेहद यादगार रही। सभी प्रशिक्षाणार्थियों ने दल बनाकर उत्साह, सहयोग और टीम–वर्क के साथ धान काटने का कार्य किया। काम करते हुए हँसी-मजाक, गीतों की धुन और साथियों का सहयोग—इन सबने माहौल को और भी आनंदमय बना दिया। किसानों के कठिन परिश्रम को अनुभव करते हुए हमें यह समझ में आया कि भोजन का हर दाना अनमोल है और उसका सम्मान करना हमारी जिम्मेदारी है। यह अनुभव न केवल ज्ञानवर्धक था, बल्कि हमें जीवन के मूल्यों से भी जोड़ गया।

तनवी केरकेटटा
द्वितीय वर्ष 'अ'

धान कटनी का अनुभव

हमारे महाविद्यालय में 14-11-2025 को धान कटनी का आयोजन किया गया। इस गतिविधि में सभी प्रशिक्षणार्थियों को अलग-अलग समूहों में बाँटा गया और प्रत्येक समूह को धान काटने का कार्य दिया गया। हमारे समूह ने मिलकर बहुत उत्साह और सहयोग के साथ धान की कटनी की। समूह में काम करते हुए हमें बहुत मज़ा आया और सभी ने पूरी जिम्मेदारी से अपना योगदान दिया। जिस चावल को हम रोज़ भोजन के रूप में खाते हैं, उसे स्वयं काटने का अनुभव मेरे लिए नया और सीखने योग्य रहा। यह करके महसूस हुआ कि अन्न का हर दाना कितनी मेहनत से तैयार होता है। कीचड़ भरे खेतों में उतरकर काम करना आसान नहीं था, लेकिन इसे करते हुए हमें किसानों की कठिनाइयों का वास्तविक अनुभव मिला।

काम करते समय हम सभी ने मिलकर गीत भी गाए, हँसी-मजाक किया और देखते-ही-देखते काम पूरा हो गया—यह पता ही नहीं चला कि समय कब बीत गया। समूह के साथ किया गया यह अनुभव मेरे लिए बहुत यादगार रहा और इससे मैंने अन्न के महत्व और मेहनत के मूल्य को गहराई से समझा।

सुप्रिया मिंज
द्वितीय वर्ष 'अ'

धान कटाई का अनुभव

सामूहिक रूप से किसी भी कार्य को करना यह दर्शाता है कि हम एक-दूसरे के प्रति कितनी सहयोग की भावना रखते हैं। हमारे शिक्षण महाविद्यालय में धान कटाई का जो अनुभव मिला, वह केवल एक कार्य नहीं था, बल्कि एक प्रकार का जीवन–पाठ था। धान काटते समय यह महसूस हुआ कि खेत से अन्न को तैयार होकर हमारे थालियों तक आने में कितनी मेहनत लगती है। कीचड़ भरे खेत, धूप, थकावट—इन सबके बीच काम करना आसान नहीं था, फिर भी हमने कार्य को पूरा किया। खलिहान में धान पहुँचाने तक का हर चरण हमें कठिन मेहनत का महत्व सिखाता रहा। हालाँकि काम थकान भरा था, लेकिन इस अनुभव ने मुझे यह समझाया कि जीवन में चुनौतियाँ आएँ तो हमें डरना नहीं चाहिए। थकावट और कठिनाइयों के बीच भी आगे बढ़ते रहना ही असली संघर्ष है। इस सामूहिक गतिविधि ने यह भी सिखाया कि कोई भी काम असंभव नहीं होता, बशर्ते हम एकता, सहयोग और आपसी भरोसे के साथ काम करें। सच कहें तो ***एकता में ही बल है***—यह बात इस अनुभव ने और भी गहराई से समझा दी।

डिबर संडी पुर्ती
प्रथम वर्ष 'अ'

धान कटाई

कुछ महीनों पहले खेतों में,
हमने लगाया था हरा पौधा
दिनांक 14/11/2025 को हमने
देखा, वो सुनहरी रंगों में
बदल चुका है।

देख इस दृश्य को
याद मुझे आ गई –
गाना, मेरे देश की धरती,
सोना, उगले-उगले
हीरा-मोती, मेरे देश की धरती।

खेतों पर है फसल तैयार
देख सबने कहा- आखिरकर
रंग लाया न हमारा मेहनत ।
हाथों पर हँसुआ लिये प्रशिक्षणार्थीगण
काटने को उतर पड़े, फसल को खेतों पर।

ठंडी थी मौसम, पर थी बड़ी सुहावनी,
फसलों एवं घासों पर
ओस की बूँदें बन बैठी थी,
जैसे राजा-रानी।

ठंडी हवा बालों एवं चेहरों को
छूते आगे निकल पड़ती।
बड़ी ही बेरहमी से
हिलाते हुए फसल, और हमारी बत्तीसी ।

परन्तु हमने न पीछे हटा,
वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो,
के समान, दिन में हिम्मत बाँधे
लग गए अपने कामों पर।

सुनहरी, पीली रंगों के बीच
हरी, नीली, पीली एवं लाल रंग
बिखर गए चारों ओर,
जैसे फूलों पर मंडराती तितलियाँ ।

हवा की लहर में, गीत की धुन,
खेतों के चारों ओर गूंज उठी,
गीतों के संग, कहीं हँसी तो कहीं
ठंड से कपकापती आवाज़ आती, ।
जैसे पार्श्व गायक ।

साथी तुम हाथ बांटना
के साथ, देखते ही देखते
खेतों में खड़ी फसल
सो गई गहरी नींद में,
अन्तः घोड़ा बेचकर सोया फसल
धीरे-धीरे ढेर में बदल गई।
(एकता में बल है)
"Because Team work is the best way
for the great success."

रोस केरकेटटा
द्वितीय वर्ष 'अ'

धान कटनी – अनुभव

हमारे महाविद्यालय में प्रशिक्षणार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु समय–समय पर अनेक गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इन्हीं गतिविधियों में धान रोपनी और धान कटनी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, क्योंकि हमारा देश कृषि प्रधान है और यहाँ के अधिकांश लोग अपनी जीवन-यापन के लिए कृषि पर निर्भर रहते हैं।

इसी क्रम में 14/11/2025 को महाविद्यालय परिसर के समीप धान कटनी कार्यक्रम आयोजित किया गया। सभी प्रशिक्षणार्थियों को अलग-अलग दलों में बाँटा गया और प्रत्येक दल को धान उठाने तथा काटने का कार्य सौंपा गया। खेतों में पानी और कीचड़ होने के बावजूद सभी विद्यार्थी पूरे उत्साह और उमंग के साथ धान काटते दिखाई दे रहे थे। उनकी समूह में गाई जा रही सुमधुर ध्वनियाँ वातावरण को और भी आनंदमय बना रही थीं। यह दृश्य हमें अपने बचपन की याद दिला रहा था, जब हम कीचड़ में खेलकर खूब आनंद लिया करते थे, चाहे घर वाले कुछ भी कहें!

दोपहर 12 बजे लंच के बाद थोड़े समय के विश्राम के उपरांत पुनः सभी दल अपने कार्य में जुट गए। सभी ने मेहनत भी की और खूब मज़ा भी लिया। जिस प्रकार एक किसान अपनी फसल को लहलहाते देख खुश होता है, उसी प्रकार हम भी अपना कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर अत्यंत प्रसन्न और संतुष्ट हुए।

सामूहिक रूप से किया गया कार्य हमेशा सुगम और प्रभावी होता है। चाहे कार्य छोटा हो या बड़ा, मिलजुल कर करने पर वह कुछ ही समय में पूरा हो जाता है। इस धान कटनी कार्यक्रम से हमें यही सीख मिली कि *जो भी कार्य मिले, उसे खुशी, सहयोग और लगन के साथ करना चाहिए,* क्योंकि इससे आत्मसंतुष्टि प्राप्त होती है।

साक्षी लकड़ा,
द्वितीय वर्ष 'अ'

धान कटनी का अनुभव

हम सभी जानते हैं कि झारखण्ड राज्य पेड़–पौधों, पहाड़ों और प्राकृतिक सौंदर्य से घिरा हुआ है। यहाँ अधिकांश लोग अपने जीवन-यापन के लिए कृषि पर निर्भर रहते हैं। इसी कारण हमारा देश कृषि प्रधान राष्ट्र कहलाता है। PTEC महाविद्यालय भी कृषि के महत्व और उपयोगिता को समझाने के लिए प्रशिक्षणार्थियों को सुनहरा अवसर प्रदान करता है।

जिस प्रकार हमारे किसान माता-पिता दिन–रात मेहनत करते हैं, अपना पसीना बहाते हैं और अन्न पैदा कर परिवार की सभी जरूरतें पूरी करते हैं, उसी प्रकार हमने भी धान कटनी के दौरान खेती से जुड़े अनेक अनुभव प्राप्त किए। खेतों में भरा पानी, ठंडी हवा और मिट्टी की खुशबू को महसूस करते हुए हमें प्रकृति के साथ जुड़ने का सुखद अवसर मिला।

सभी प्रशिक्षणार्थी पूरे उत्साह, ऊर्जा और खुशी के साथ धान काट रहे थे। अलग–अलग प्रकार की मधुर धुनों के साथ सभी अपने हाथों और पैरों की लय को मिलाते हुए कार्य कर रहे थे। एक-दूसरे का सहयोग इतना सहज था कि पता ही नहीं चला कब हमारा काम पूरा हो गया।

इस अनुभव से हमें यह सीख मिली कि समूह में काम करने से न केवल कार्य जल्दी पूरा हो जाता है, बल्कि एकरूपता, सहयोग और आपसी समझ भी बढ़ती है। साथ ही, दूसरों को समझने और उनकी सहायता करने की भावना भी विकसित होती है।

एक शिक्षक का दायित्व केवल शिक्षा देना ही नहीं है, बल्कि भविष्य के लिए अन्न के महत्व और उपयोगिता की जानकारी भी देना है, ताकि आने वाले समय में यदि कोई कठिन परिस्थिति आए, तो विद्यार्थी उसका सामना आसानी से कर सकें। यह पूरा अनुभव मेरे लिए अत्यंत सुखद और सीख देने वाला रहा।

रीना तिग्गा,
द्वितीय वर्ष 'अ'

धान कटाई का अनुभव

हम लोगों का धान कटनी का कार्यक्रम 14/11/2025 को आयोजित किया गया। उस दिन हम सभी खेतों में धान काटने के लिए गए। वहाँ पहुँचकर हमें यह समझने का अवसर मिला कि किसान अपनी खेती में कितना परिश्रम करते हैं। धान तैयार होने तक किसान न केवल दिन–रात मेहनत करते हैं, बल्कि कटाई के समय भी उन्हें काफी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।

धान को काटकर घर तक लाना, उसे सुखाना और बाद में चावल बनाना—इन सबमें बहुत मेहनत लगता है। इस अनुभव से हमें एहसास हुआ कि किसान कितना श्रम करके हमारे लिए अन्न उपजाते हैं। उनकी इस मेहनत से ही हम सभी का जीवन चलता है।

धान कटनी के इस कार्यक्रम से मैंने यह सीखा कि एक दाने को उपजाने में किसान को कितना परिश्रम करना पड़ता है और हमें उनके कार्य का सम्मान करना चाहिए।

बिनीत लकड़ा,
प्रथम वर्ष 'ब'

कटती- छटती धान की बालियाँ

सुनहरी फसल, मिट्टी की खुशबू साथ लाती है
मेहनत किसान की मुस्कुराती नजर आती है.
धूप में जलकर भी ये माटी सोना बन जाती है,
धान कटाई में खुशियों की फसल लहराती है।

खेत से खलिहान तक, खलिहान से घर तक,
हजारों बार चलकर भी कदम रुकते नहीं
दाने धान के बालियों में लटकते देख
पैर चलते हुए थकते नहीं।

फसल उगाने से काटने तक,
खलिहान से घर के आंगन तक,
देखे गए सपनों का आभास कराती है।

थकान होने के बावजूद होती है
चेहरे पे एक अलग सी खुशी,
खुशी इस बात की उनके
धानों से मिलने वाले चावलसे,
न जाने कितनों का पेट भरेगा।

ब्यूटी केरकेट्टा
प्रथम वर्ष 'ब'

धान की कटाई

"धान हमारा अन्न, और अन्न ही हमारा जीवन है।"

हमारे कॉलेज कैलेंडर में पहले से तय कार्यक्रम के अनुसार खलिहान और उसके आसपास के खेतों में धान कटनी का दिन आखिरकार आ ही गया। चारों ओर हरी-भरी धान की लहलहाती फसल थी—मानो प्रकृति स्वयं मुस्कुराकर हमें स्वागत कर रही हो। कई महीनों की प्रतीक्षा के बाद आज वह दिन आया था जब तैयार फसल को काटने का अवसर हमें मिलने वाला था।

कॉलेज के नीचे कतारबद्ध खेत हमें आकर्षित कर रहे थे। PTEC के उत्साही, कर्मठ और खुशमिजाज प्रशिक्षणार्थी दलों में बाँटकर खेतों में उतरे। यह दृश्य रंग-बिरंगी टोली की तरह मनमोहक प्रतीत हो रहा था। जेवियर हाउस, ब्रिटो हाउस, लीवंस हाउस और लोयोला हाउस—इन चारों दलों में जोश देखते ही बनता था। तीन दल हँसिया हाथों में लिए कटाई के लिए आगे बढ़े। कमर झुकी, हाथों में लय, और चारों तरफ "चर-पर–चर-पर" हँसिये की मधुर ध्वनि गूँज रही थी। वहीं लीवंस हाउस के साथी धीरे-से फसल को गोछकर बांधने लगे—यह दृश्य अत्यंत स्नेहपूर्ण और मनमोहक था।

ठंडी-ठंडी हवा बह रही थी। भीगी मिट्टी हमारे पैरों को अपने अंदर समेटती जा रही थी। हवा की लहरें और मिट्टी की सोंधी खुशबू ने हमें बार-बार यह महसूस कराया कि प्रकृति कितनी सुंदर है। शुरुआत में ठंड लग रही थी, लेकिन कुछ ही पलों में हम सभी उसमें घुलमिल गए और उस ठंड को भी आनंद की तरह महसूस करने लगे। खेत के कीचड़ और पानी में कई छोटे-बड़े जीव-जंतु भी दिखाई दिए—मेंढक, ड्रैगनफ्लाई, फतिंगा और कई प्रकार के रंग-बिरंगे कीड़े। कुछ छात्राएँ इन्हें देखकर घबरा भी गईं, पर वातावरण फिर भी उल्लासपूर्ण बना रहा।

हममें से शायद ही किसी ने सोचा था कि विभिन्न जिलों से आए हुए साथी एक साथ मिलकर इतने सामंजस्य से कार्य करेंगे। सीतागढ़ के खेतों में फसल काटते-काटते बीच-बीच में मनोरंजन, लोकगीत, कहावतें और मज़ेदार बातचीत का दौर भी चलता रहा। हमारे कुछ आदरणीय गुरुजनों ने इन अनमोल पलों को यादगार बनाने के लिए कैमरे और मोबाइल में हमारी तस्वीरें कैद कीं। उन तस्वीरों में हमारे चेहरों की चमकती मुस्कान यह साबित कर रही थी कि *एकता में ही बल है* और सचमुच—हमने मिलजुलकर एक ही दिन में पूरी कटनी का कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर लिया।

धान काटते-काटते हमें कृषि के महत्त्व, मेहनत और उसकी प्रक्रिया का वास्तविक ज्ञान प्राप्त हुआ। एक छोटा-सा दाना कैसे कई गुना अन्न बनकर हमें जीवन देता है—यह अनुभव प्रत्यक्ष रूप से समझ आया। शिक्षा के साथ-साथ हमने कृषि शिक्षा भी अर्जित की, जो हमारे जीवन के लिए अत्यंत मूल्यवान है।

दीप्ति केरकेट्टा

धान कटाई का अनुभव

खेती की हरी-भरी फसलें, उनकी लहलहाती सुंदरता और खेतों से आती सोंधी खुशबू मन को प्रसन्न कर देती है। ऐसा लगता है जैसे प्रकृति की गोद में हमारी सांसें भी ताज़गी से भर जाती हैं। इस सौंदर्य में खो जाना एक विशेष अनुभव है, जिसका हम कई वर्षों से इंतज़ार करते रहे हैं।

धान की खेती जितनी मेहनत से होती है, उसकी कटाई भी उतनी ही परिश्रम मांगती है। हमारे महाविद्यालय में धान कटनी का आयोजन किया गया, जिसका हमें बेसब्री से इंतज़ार था। कहते हैं—*मेहनत का फल मीठा होता है*—और यह मिठास हमें उसी दिन महसूस हुई जब कटाई का समय आया।

हमने पूरे जोश, उमंग और खुशी के साथ धान कटनी की शुरुआत की। शुरुआत में मुझे थोड़ी परेशानी हुई, क्योंकि मैंने इससे पहले कभी धान नहीं काटा था। यह मेरे जीवन की पहली धान कटाई थी, और मैं खुद को बहुत भाग्यशाली महसूस कर रहा था कि मुझे यह अवसर मिला।

मेरे साथ मेरे प्यारे दल "ब्रिटो हाउस" के साथी थे। वे मुझे लगातार हौसला देते रहे, बीच-बीच में बातें करके उत्साह बढ़ाते रहे और सही तरीके से काम करने में मेरी मदद भी करते रहे। उनके सहयोग से मेरा डर दूर हो गया और आत्मविश्वास बढ़ता गया।

हमारे कॉलेज के कुछ प्रतिभाशाली गायक और कलाकार भी हमारे साथ थे। वे मधुर गीत गाकर पूरे माहौल को खुशियों से भर रहे थे। उनके गीतों से थकान दूर हो जाती थी और काम और भी आनंददायक बन जाता था।

धान काटने के बाद हम धान के बोझे को ट्रैक्टर पर चढ़ाने और उतारने का काम भी करते थे। इस दौरान हमने कीचड़ में खेलते हुए तरह-तरह की आकृतियाँ बनाईं, छोटे-छोटे खेल खेले और बहुत मस्ती की। ऐसा लग रहा था जैसे हम किसी अलग दुनिया में पहुँच गए हों—एक ऐसी दुनिया जिसे स्वर्ग कहना भी गलत नहीं होगा।

धीरे-धीरे हमारा पूरा कार्य समाप्त हो गया और हम महाविद्यालय लौट आए। इस धान कटाई से मुझे यह महत्वपूर्ण सीख मिली कि **हमें मिलकर, एक-दूसरे की सहायता करते हुए काम करना चाहिए।** सहयोग और एकता से कठिन से कठिन कार्य भी सरल बन जाता है।

बिपिन कच्छप

मिनी स्पोर्ट्स

मिनी स्पोर्ट्स

800 mtr race

400 mtr race

1500 mtr race

Javelin Throw

400 mtr race

Javelin Throw

800 mtr race

Long Jump

मिनी स्पोर्ट्स

Long Jump

Shot Put

Discus Throw

High Jump

Discus Throw

High Jump

Shot Put

Triple Jump

मिनी स्पोर्ट्स दिवस – अनुभव

हमारे महाविद्यालय में 29/11/2025 को मिनी स्पोर्ट्स का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को लेकर हम सभी प्रशिक्षणार्थी बहुत उत्साहित थे। सभी ने अनुशासनपूर्वक भाग लिया और प्रत्येक दल ने मिलकर पंक्तिबद्ध परेड में हिस्सा लिया, जिससे कार्यक्रम का आरंभ बहुत ही सुंदर ढंग से हुआ।

खेल-कूद का उद्देश्य केवल जीतना नहीं, बल्कि उत्साह, उमंग और टीम-भावना को बढ़ाना भी होता है। इसी भावना के साथ सभी दलों ने एक-दूसरे का मनोबल बढ़ाया और पूरे जोश से मैदान में उतरे। कार्यक्रम में यह बात भी महसूस हुई कि *यदि हम ठान लें, तो कोई भी लक्ष्य मुश्किल नहीं होता।*

दौड़ प्रतियोगिता शुरू होते ही माहौल में ऊर्जा भर गई। 18 प्रतिभागियों ने एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करते हुए पूरी क्षमता से दौड़ पूरी की। उनके कदमों की गड़गड़ाहट और दर्शकों की तालियों ने पूरे मैदान को जीवंत बना दिया। मुझे भी इस प्रतियोगिता में भाग लेने का अवसर मिला, जो मेरे लिए गर्व और खुशी का क्षण था।

मिनी स्पोर्ट्स दिवस ने हमें सिखाया कि खेल जीवन में अनुशासन, मेहनत और सकारात्मक सोच को विकसित करता है। यह दिन मेरे लिए यादगार रहा।

मरियम होरो
प्रथम वर्ष

लघु खेल दिवस का अनुभव

हमारे महाविद्यालय में 29/11/2025 को 64वाँ लघु खेल दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। सुबह से ही मन में विशेष खुशी थी, क्योंकि आज पूरे महाविद्यालय में खेल दिवस का माहौल था। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि फा. जोन तिर्की थे। उनके आगमन के बाद कार्यक्रम की शुरुआत **महाविद्यालय गीत** और **झंडोत्तोलन** से हुई। इसके बाद सभी दलों ने पंक्तिबद्ध होकर परेड की। परेड अत्यंत आकर्षक और अनुशासित थी, जिसे देखकर सभी दर्शक प्रभावित हुए। परेड के बाद खेल प्रतियोगिताएँ शुरू हुईं।इस अवसर पर कई दौड़ प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं— **400 मीटर दौड़, 800 मीटर दौड़ और 1500 मीटर दौड़** सभी प्रतिभागियों ने पूरी मेहनत और लगन से अपनी-अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण मैं दौड़ में भाग नहीं ले सकी, लेकिन मुझे समिति में कार्य करने का अवसर मिला। मेरा कार्य था—दौड़ में विजेताओं को पकड़कर उनका नाम दर्ज करना। यह काम मुझे बहुत अच्छा लगा और मैंने उत्साह के साथ पूरा किया। खेल प्रतियोगिताओं के बाद मनोरंजक खेल भी आयोजित किए गए। इनमें सबसे मजेदार खेल था— **"टीना फोड़"** – इसमें प्रतिभागियों की आँखों पर पट्टी बाँधी जाती थी और उन्हें टीना (घड़ा) तोड़ना होता था। जो इसे तोड़ देता, वही विजेता माना जाता। इसके बाद प्रशिक्षकगण एवं अध्यापकगण के लिए भी खेल आयोजित किए गए। इनमें सबसे रोमांचक खेल था— **"बैलून फुलाना"** – प्रतिभागियों को शुरुआती बिंदु से दौड़कर आगे आना और तेजी से बलून फुलाना होता था। यह खेल देखकर सभी विद्यार्थी बहुत खुश हुए और माहौल हँसी-खुशी से भर गया।

अंत में सभी विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। यह लघु खेल दिवस मेरे लिए अत्यंत यादगार रहा क्योंकि इससे टीमवर्क, अनुशासन और उत्साह का महत्व समझ में आया।

रानी तिर्की
प्रथम वर्ष 'ब'

लघु खेलकूद दिवस का अनुभव

दिनांक 29/11/2025 को हमारे महाविद्यालय में लघु खेलकूद दिवस का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत *मशाल प्रज्ज्वलन* से हुई, जिसे हमारे मुख्य अतिथि **फ़ादर जॉन तिर्की** ने प्रज्वलित किया। खेलकूद कार्यक्रम का हिस्सा बनकर मुझे बहुत कुछ सीखने और समझने का अवसर मिला। मैं *लीवंस हाउस* का हिस्सा थी और अपने दल के साथ पूरे उत्साह से मैदान में उतरी।

सबसे पहले झंडोतोलन किया गया, फिर सभी दलों ने अनुशासनपूर्वक परेड में हिस्सा लिया। परेड ने हमारी एकता, तालमेल और ऊर्जा को प्रदर्शित किया। किसी दल में मिलकर काम करने का आनंद ही कुछ अलग होता है। परेड के बाद हम सभी अपने-अपने निर्धारित स्थान पर बैठ गए।

आज के कार्यक्रम में जो *ड्रिल अभ्यास* कराया गया था, वह मुझे विशेष रूप से अच्छा लगा। ऐसा अवसर बार-बार नहीं मिलता, इसलिए इसे करते समय मन में ऊर्जा और गर्व की अनुभूति हो रही थी। इसके बाद खेल प्रतियोगिताएँ शुरू हुईं— 400 मीटर दौड़, 800 मीटर दौड़, 1500 मीटर दौड़। प्रतिभागी पूरे जोश, जज़्बे और आत्मविश्वास के साथ ट्रैक पर दौड़ रहे थे। हम सबने तालियाँ बजाकर और उत्साहवर्धन करके अपने-अपने दल के खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाया। मैदान में जोश, उमंग और रोमांच का माहौल था। कहावत है— *"हर कोई जीत नहीं सकता, पर हारता वही है जो मैदान में उतरता ही नहीं।"*

कार्यक्रम के अंत में महाविद्यालय के कर्मचारियों और व्याख्याताओं के लिए भी मनोरंजक खेल आयोजित किए गए, जिन्हें देखकर सभी बहुत आनंदित हुए। फिर वह क्षण आया जिसका सभी को इंतज़ार था— विजेताओं को मेडल और प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। अंत में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम के बाद सभी छात्र-छात्राओं ने मिलकर हल्की-फुल्की चटपटी चीज़ें खाईं, बातें कीं और अपने-अपने अनुभव साझा किए। हमारे दल की मार्गदर्शिका *सि. शीला* और *मैम तेरेसा* ने पूरे समय हमारा उत्साह बढ़ाया।

आज का दिन उत्साह, ऊर्जा और खुशी से भरा एक अविस्मरणीय दिन रहा।

निभा खलखो
प्रथम वर्ष 'अ'

Mini Sports Day का अनुभव

"खेल में जीतना ही सब कुछ नहीं है,
बल्कि जीतने की इच्छा रखना सबसे महत्वपूर्ण है।"

मैं निशी कुजूर, हमारे महाविद्यालय में आयोजित *Mini Sports Day* का अपना अनुभव साझा कर रही हूँ। दिनांक **29/11/2025, शनिवार** को हमारे महाविद्यालय में Mini Sports का भव्य आयोजन किया गया, जिसकी तैयारी कई हफ्ते पहले से शुरू हो गई थी। इसमें **High Jump, Long Jump, Discus Throw, Shot Put, Javelin Throw, 100m, 200m, 800m और 400m दौड़** जैसी कई प्रतियोगिताएँ शामिल थीं।

यह मेरे जीवन का पहला मौका था जब मुझे इतने बड़े स्तर पर खेलों में भाग लेने का अवसर मिला। इसलिए मेरे अंदर उत्साह, उमंग और आत्मविश्वास दोनों था। मैंने पूरी कोशिश से सभी प्रतियोगिताओं में भाग लिया। कुछ प्रतियोगिताओं में मैं असफल भी रही, लेकिन मुझे निराशा नहीं हुई। बल्कि खुशी इस बात की थी कि मुझे सीखने और अनुभव प्राप्त करने का मौका मिला। कहा भी गया है—

"हारकर बैठ गए तो आगे कभी नहीं बढ़ पाओगे,
लेकिन हार से सीखकर फिर कोशिश की, तो अवश्य सफल हो जाओगे।"

हमारे महाविद्यालय में कुल चार दल हैं— **ब्रिटो, लोयोला, जेवियर और लीवन्स**। Mini Sports Day के दिन हम सभी ने अपने-अपने दल के साथ परेड की। मुझे परेड करने में बहुत अच्छा लगा, क्योंकि मैं *बैंड ग्रुप* में बांसुरी बजा रही थी। परेड के बाद हमने जो *ड्रिल* प्रस्तुत किया, वह भी अत्यंत रोमांचक अनुभव था। ड्रिल करने से ऊर्जा, अनुशासन और एकता का अनुभव हुआ।

इसके बाद सभी दौड़ प्रतियोगिताओं के *फाइनल* हुए। मैदान में अपने-अपने दल के प्रतिभागियों का उत्साह बढ़ाने के लिए हम सब जोरदार तालियाँ और हौसला-अफजाई कर रहे थे। इसके बाद महाविद्यालय के **Non-Teaching Staff** के बीच **"टीना फोड़"** खेल का आयोजन किया गया, जो देखने में काफी मनोरंजक था। अंत में हमारे **व्याख्याताओं** के बीच **"बैलून फुलाकर फोड़ने"** वाला खेल हुआ, जिसे देखकर सभी खूब आनंदित हुए।

कार्यक्रम के अंत में सभी विजेताओं को **मेडल और प्रमाणपत्र** देकर सम्मानित किया गया। इसके बाद हम सभी अपने दल में वापस गए, जहाँ कुछ जलपान की व्यवस्था की गई थी। सबने मिलजुलकर उस पल का आनंद लिया।

Mini Sports Day मेरे जीवन का एक यादगार और प्रेरणादायक अनुभव बन गया। मैंने खेल के क्षेत्र में अपनी पूरी कोशिश की, और यह अवसर मेरे लिए हमेशा विशेष रहेगा।

निशी कुजूर
प्रथम वर्ष' 'ब'

लघु खेल दिवस का अनुभव

इस वर्ष हमारे महाविद्यालय में **64वाँ लघु खेल दिवस** बड़ी उत्सुकता और उत्साह के साथ 29/11/2025 को आयोजित किया गया। पिछले कई हफ्तों से सभी प्रतिभागी कड़ी मेहनत, अभ्यास और अनुशासन के साथ अपनी-अपनी प्रतियोगिताओं की तैयारी कर रहे थे।

इस खेल दिवस में **दौड़, लंबी कूद, शॉट पुट, भाला फेंक, रिले रेस** सहित कई पारंपरिक और रोचक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। मैंने भी अपने **लोयोला हाउस** की ओर से हर प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर भाग लेने का प्रयास किया।

कड़ी मेहनत के बाद मैंने **भाला फेंक में तीसरा स्थान** प्राप्त किया। यद्यपि अन्य प्रतियोगिताओं में मैं सफल नहीं हो पाई, फिर भी मुझे निराशा नहीं हुई क्योंकि मैंने पूरी कोशिश की थी। कहा भी गया है—

"जीत का जश्न मनाओ और असफलता से सीखो।"

इस दिन का मैं बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी। महाविद्यालय पहुँचते ही मन में खुशी, जोश और ऊर्जा का संचार हो गया। मेरे लिए यह दिन बहुत खास रहा, क्योंकि यह मेरे जीवन में खेलों को लेकर एक नया और प्रेरणादायक अनुभव था। लघु खेल दिवस ने मुझे सिखाया कि— **कोशिश कभी व्यर्थ नहीं जाती, और जो हार नहीं मानता, वह एक दिन अवश्य जीतता है।**

नूतन टोप्पो
प्रथम वर्ष 'ब'

मिनी स्पोर्ट्स का अनुभव

मिनी स्पोर्ट्स का सही अर्थ मुझे पहले पता नहीं था। मैं सोचता था कि यह किसी बड़े खेलकूद कार्यक्रम का ही एक हिस्सा होता होगा। हमारे कॉलेज में जब हाई स्कूल के साथ अभ्यास कराया जाता था, तो लगता था कि शायद सभी का एक ही कार्यक्रम होगा। लेकिन **29 तारीख** को पता चला कि *मिनी स्पोर्ट्स केवल हमारे कॉलेज का अलग कार्यक्रम* होता है। तब समझ आया कि इसका अभ्यास भी अलग से कराया जाता है।

मिनी स्पोर्ट्स का कार्यक्रम परेड के साथ शुरू हुआ। मैंने भी परेड में भाग लिया। चूँकि हमारे स्कूल में भी हर साल खेलकूद के कार्यक्रम होते थे, इसलिए मुझे पहले से अंदाज़ा था कि किस प्रकार की गतिविधियाँ होंगी। पूरा कार्यक्रम बहुत ही अच्छा रहा। सभी प्रशिक्षकों की निगरानी में प्रतिभागियों को समय–समय पर तैयारी कराई जाती थी, जिससे प्रतियोगिताएँ सुचारू रूप से चल सकीं।

PTEC कॉलेज में विभिन्न जिलों से कार्य करने वाले लोग भी यहाँ उपस्थित थे। उनकी उत्सुकता और खेल भावना देखकर अच्छा लगा। इससे पता चला कि मिनी स्पोर्ट्स में सिर्फ विद्यार्थी ही नहीं, बल्कि पूरे कॉलेज परिवार की भागीदारी रहती है।

हमारे कॉलेज का **ग्रुप मैनेजमेंट बहुत उत्कृष्ट** है। अनुशासन, तालमेल और सहयोग भावना पूरे कार्यक्रम में दिखाई दी। इसी कारण सभी गतिविधियाँ सफल और आनंददायक रहीं।

नितेश यादव
प्रथम वर्ष 'अ'

मिनी स्पोर्ट्स का अनुभव

दिनांक **29/11/2025** को हमारे महाविद्यालय में मिनी स्पोर्ट्स का आयोजन किया गया, जिसमें सभी दलों के प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सुबह जल्दी उठकर अन्य धावकों की भीड़ में शामिल होना अपने आप में एक अलग ही अनुभव था। चारों ओर जोश, ऊर्जा और सकारात्मक माहौल महसूस हो रहा था।

मिनी स्पोर्ट्स की शुरुआत में तो शरीर काफी हल्का और उत्साहित लगता है, लेकिन जैसे-जैसे दूरी बढ़ती है, थकान और शारीरिक दर्द महसूस होने लगता है। दौड़ते समय अपने शरीर की गति, सांस और संतुलन पर ध्यान केंद्रित करना पड़ता है। यह केवल शारीरिक नहीं, बल्कि मानसिक सहनशक्ति की भी परीक्षा होती है।

लंबी दूरी की दौड़ हमें **धैर्य**, **नियमित अभ्यास**, और **लगातार प्रयास** करने की सीख देती है। कई बार प्रगति धीमी लगती है, लेकिन निरंतर अभ्यास से अंत में मिलने वाली उपलब्धि का आनंद बेहद खास होता है। यह अनुभव जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी आत्मविश्वास बढ़ाता है—क्योंकि जो धैर्य लंबी दौड़ में सीखा जाता है, वही आगे बढ़ने की प्रेरणा बन जाता है।

इस मिनी स्पोर्ट्स ने मुझे न केवल शारीरिक रूप से मजबूत बनाया, बल्कि मानसिक दृढ़ता भी प्रदान की। यह दिन मेरे लिए सीख और प्रेरणा से भरा हुआ रहा।

निलेश टोप्पो
प्रथम वर्ष 'ब'

Mini Sports का अनुभव

आज के लघु खेल-कूद कार्यक्रम में देशभक्ति की भावना स्वाभाविक रूप से प्रकट हुई। दिनांक **29-11-2025** को हमारे महाविद्यालय में मिनी स्पोर्ट्स का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत *राष्ट्रीय गीत* के साथ हुई, जिसने हमें अपने कर्तव्य के प्रति प्रेम, ईमानदारी और कार्य के प्रति समर्पण की भावना से भर दिया। इसके पश्चात परेड की प्रक्रिया शुरू हुई। सभी दलों ने कदम से कदम मिलाते हुए अनुशासन और एकता का सुंदर प्रदर्शन किया। परेड समाप्त होते ही मुख्य अतिथि द्वारा **मशाल प्रज्वलित** की गई। यह मशाल सदैव खेल के प्रति समर्पण, ऊर्जा और निरंतरता का प्रतीक है। समय बीतने के साथ कार्यक्रम आगे बढ़ा और मुख्य प्रतियोगिताएँ शुरू हुईं। इसमें **400 मीटर, 800 मीटर तथा 1500 मीटर** की दौड़ शामिल थी। सभी प्रतिभागियों ने पूरे जोश और आत्मविश्वास के साथ भाग लिया। मैदान में कोई न कोई जीतता है, और कोई हारता है—लेकिन *हार को स्वीकार कर भी हार न मानना* जीवन को आगे बढ़ाने का सबसे बड़ा मंत्र है। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी व्याख्यातागण, प्रशिक्षार्थियों तथा महाविद्यालय के समस्त कर्मचारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसी सहयोग और समन्वय के कारण यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

पौलुस केरकेटटा
प्रथम वर्ष 'ब'

खेल–कूद प्रतियोगिता का अनुभव

दिनांक **29/11/2025** को हमारे महाविद्यालय में खेल–कूद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता की तैयारी पिछले कई सप्ताह से चल रही थी। इसमें कुल चार दल शामिल थे—**जेवियर, लोयोला, ब्रिटो और लीवन्स**। महाविद्यालय में खेल–कूद का यह मेरा पहला अनुभव था क्योंकि मैं जिस *रात्रि विद्यालय* में पढ़ता था, वहाँ वार्षिक खेल–कूद का आयोजन तो होता था, पर इसमें केवल विद्यालय के छात्र ही भाग लेते थे और बाहरी लोग शामिल नहीं हो पाते थे। वहीं, महाविद्यालय में आयोजित प्रतियोगिता का अनुभव अलग और नया था, यद्यपि यहाँ भी केवल महाविद्यालय के छात्र–छात्राएँ तथा शिक्षक ही उपस्थित थे, इसलिए उत्साह और शोर उतना अधिक नहीं था। फिर भी, वातावरण जोश और प्रतिस्पर्धा से भरपूर था। इस प्रतियोगिता से मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला—

- **मैदान का निर्माण कैसे किया जाता है**,
- कार्यक्रम को **समय–सारणी के अनुसार** कैसे संचालित किया जाता है,
- और खेलों में **अनुशासन**, **टीम भावना** तथा **नियमों का पालन** कितना आवश्यक होता है।

खेल–कूद प्रतियोगिता पूर्ण रूप से सफल रही। इसमें भाग लेकर मुझे खेल भावना, अनुशासन, और टीमवर्क का महत्व समझ आया। यह अनुभव मेरे लिए यादगार और शिक्षाप्रद रहा।

राहुल कुजूर

आत्म-स्वाभिमान : सफलता और व्यक्तित्व का आधार

आत्म-स्वाभिमान मनुष्य के व्यक्तित्व की वह शक्ति है, जो उसे अपनी पहचान, क्षमता और मूल्य को समझने का साहस देती है। यह वह भाव है जिसके कारण व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में भी दृढ़ रहता है और सही मार्ग पर चलने का संकल्प बनाए रखता है। आत्म-स्वाभिमान कोई बाहरी उपहार नहीं, बल्कि भीतर से विकसित होने वाली एक आंतरिक शक्ति है।

जब व्यक्ति स्वयं का सम्मान करता है, तभी वह दूसरों का भी सम्मान कर पाता है। आत्म-स्वाभिमान हमें यह सिखाता है कि समझौता जीवन का हिस्सा है, परंतु अपनी गरिमा और सिद्धांतों का बलिदान कभी नहीं करना चाहिए। यह हमें गलत कार्यों से दूर रखता है और सत्य, नैतिकता तथा कर्तव्य की दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

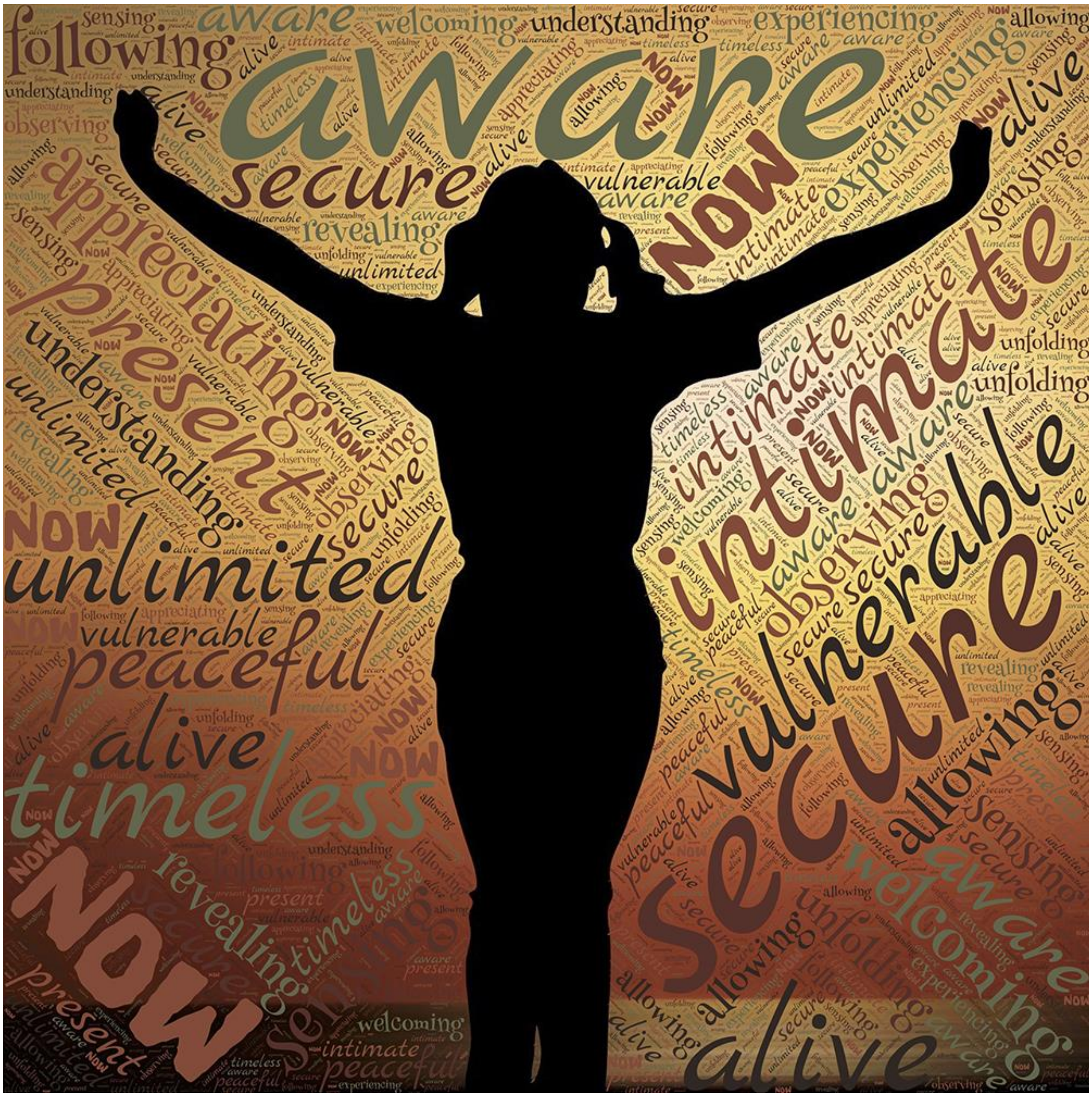

विद्यालय और समाज में आत्म-स्वाभिमान का महत्व और भी बढ़ जाता है। विद्यार्थी जब स्वयं पर विश्वास रखते हैं, तो वे नई चुनौतियों को अपनाने, अपनी प्रतिभा को निखारने और अपने सपनों को साकार करने के लिए अधिक प्रेरित होते हैं। आत्म-स्वाभिमान उन्हें भय, हिचक और आत्म-संदेह से मुक्त करता है तथा उनके भीतर नेतृत्व, आत्म-अनुशासन और सकारात्मक सोच का विकास करता है।

आज की तेज रफ्तार दुनिया में आत्म-स्वाभिमान एक ढाल की तरह कार्य करता है, जो हमें नकारात्मकता, आलोचना और असफलताओं से संरक्षण देता है। यह हमें गिरकर भी संभलने का साहस प्रदान करता है। जो व्यक्ति स्वयं के मूल्य को पहचान लेता है, वह जीवन में हर संघर्ष का सामना आत्मविश्वास से करता है और सफलता का मार्ग स्वयं तैयार करता है।

अतः आवश्यक है कि हम अपने भीतर आत्म-स्वाभिमान की भावना को निरंतर मजबूत करें—अपनी क्षमताओं पर विश्वास रखें, अपने कर्तव्य का ईमानदारी से पालन करें और अपनी सोच को सकारात्मक बनाए रखें। यही आत्म-स्वाभिमान हमें सम्मानित, सक्षम और प्रेरक व्यक्तित्व बनने की ओर अग्रसर करता है।

PRIMARY TEACHERS' EDUCATION COLLEGE

Gurwa, PO Sitagarha, Dist. Hazaribag 825 303, Jharkhand, INDIA

(A Christian Minority Institution under the Hazaribag Jesuits Education Society: Estd: 1958)

Recognized by ERC, NCTE vide order No. BR-E/E- 2/96/2799(12) dt 11.02.1997.

Mob. 8987903798 (O) 9835358073 (P) Email: info@ptecgurwa.org Website: www.ptecgurwa.org